* R E - 3 2 3 8 - 3 9 / 9 0 0 *

RE-3238-39

M. A. (Part - I & II) Examination

April / May – 2010

Hindi : Paper - V

(हिन्दी उपन्यास)

Time : 3 Hours] [Total Marks : **70**

RE-3238

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1 & 2)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 5**

☛ Subject Code No. : **3 2 3 8** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **1**

Seat No. :

Student's Signature

(२) **दोनों** विभागों के उत्तर अलग–अलग पुस्तिकाओं में लिखिए ।

(३) सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

१ कथ्य और शिल्प की दृष्टि से 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास का मूल्यांकन कीजिए ।

अथवा

१ 'मृगनयनी' उपन्यास के आधार पर नायिका की चारित्रिक विशेषताओं को उजागर कीजिए ।

२ "'रंगभूमि' उपन्यास औद्योगिक सभ्यता का महाकाव्य है ।" – इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

अथवा

२ 'पचपन खंभे लाल दिवारें' उपन्यास की नायिका सुषमा के आन्तर द्वंद्व पर प्रकाश डालिए ।

३ 'नदी के द्वीप' उपन्यास में व्यक्त संवेदना को स्पष्ट कीजिए ।

अथवा

३ मनोहर श्याम जोशी द्वारा रचित उपन्यास 'कसप' मध्यम वर्ग के जीवन की जीवन्त कथा है । – इस कथन की चर्चा कीजिए ।

RE-3239

सूचना :

(१)

નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.
Fillup strictly the details of ☛ signs on your answer book.

Name of the Examination :

☛ **M. A. (Part - 1 & 2)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi : Paper - 5**

☛ Subject Code No. : **3 2 3 9** ☛ Section No. (1, 2,.....) : **2**

Seat No. :

Student's Signature

(२) **दोनों** विभागों के उत्तर अलग–अलग पुस्तिकाओं में लिखिए ।

(३) सभी प्रश्नों के अंक **समान** हैं ।

४ निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए : २८

(१) 'कालें बेंट का चाकू' की कहानी ।

अथवा

(१) 'मृगनयनी' उपन्यास में बैजू का संगीत–प्रेम ।

(२) 'रंगभूमि' उपन्यास की राष्ट्रीय–चेतना ।

अथवा

(२) नील का चरित्र–चित्रण ।

(३) 'नदी के द्वीप' शीर्षक की सार्थकता ।

अथवा

(३) 'कसप' उपन्यास का भाषा–शिल्प ।

५ निम्नलिखित गद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

(अ) ''जिस घोड़े के माथे पर सफेद तिलक हो, उसके अगले बांये पैर की घिसी हुई नाल चन्द्र ग्रहण के समय अपने हाथ से निकालकर उसकी अँगूठी बनवाकर पहन लें तो सभी कामना पूरी हो जाती हैं ।''

अथवा

(अ) ''नायक तो इस युग में कोई भी नहीं हो सकता । नायक तो वह कहलाता है जो किसी नये राग का सर्जन करें ।''

(ब) ''आशा जड़ की ओर ले जाती है, निराशा चैतन्य की ओर । आशा आँखें बन्द कर देती हैं, निराशा आँखे खोल देती हैं । आशा सुलानेवाली थपकी हैं, निराशा जगानेवाला चाबुक ।''

अथवा

(ब) ''मैं तुम्हें घर में बंदी बनाकर रखूँगा, जिससे किसी की दृष्टि भी न पड़ सकें । मुझे डर लगता है कि तुम मुझसे छिन न जाओ...।''

(क) ''आई एम फुलफिल्ड । अब अगर मैं मर जाऊँ तो परमात्मा के प्रकृति के प्रति यह आक्रोश लेकर नहीं जाऊँगी कि मैंने कोई फुलफिल्मेन्ट नहीं जाना...।''

अथवा

(क) ''मैं प्राण हूँ, तू वाणी है, मैं वाणी हूँ तू प्राण है । मैं साम हूँ, तू ऋक् है। मैं आकाश हूँ, तू पृथ्वी है । आ हम विवाह करें...।''